

शरद जोशी के सफल व्यंग्य प्रयोग

¹नीति कुलश्रेष्ठ, ²डॉ० सोनिया यादव

¹शोधार्थिनी (हिन्दी)–

कला विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़

²शोध निर्देशिका–

सहायक अध्यापिका (हिन्दी)

कला विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़

प्रस्तावना–

हिन्दी साहित्याकाश में व्यंग्य–विधा को अपनी लेखनी के सृदृढ़ पंख देकर, उसे ऊँची उड़ान भरने में समर्थ बनाने वाले ‘श्री शरद जोशी’, स्वातन्त्र्योत्तर–युगीन श्रेष्ठ व्यंग्य–सृजक हैं। उनके व्यंग्य की धार दोधारी है। जहाँ एक ओर उनका व्यंग्य राष्ट्र, समाज व मानव–जीवन में व्याप्त विसंगतियों को उजागर करता है, तो वहीं दूसरी ओर पाठकों को सचेत कर, अपने परिवेश की समस्याओं को समझने व समाधान निकालने की अन्तर्दृष्टि भी प्रदान करता है। उनका दृढ़ व रोचक कथ्य–सम्प्रेषण, सरल–सहज–प्रभावशाली भाषा और शिल्प की नवीनता, उन्हें अन्य व्यंग्यकारों से पृथक् करती है।

मूल शोध–

स्वातन्त्र्योत्तर युगीन ‘श्री शरद जोशी’ का जन्म 21 मई, 1931 को उज्जैन, मध्य प्रदेश में, एक गुजराती ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता ‘श्री श्रीनिवास जोशी’, रोडवेज डिपो मैनेजर (मध्य प्रदेश) के सरकारी पद पर कार्यरत थे। शरद जी की माता ‘श्रीमती शान्ति देवी’ अत्यन्त ही धार्मिक महिला थीं। बाल्यावस्था से ही शरद जी का मन पुस्तकों में खूब रमा। प्रेमचन्द, देवकीनन्दन खत्री व अन्य मनपसंद लेखकों की रचनाओं को बड़े ही चाव से पढ़ा। उन्होंने महाविद्यालय में अध्ययन करने के साथ ही लेखन भी प्रारम्भ कर दिया था। इसके पश्चात् मध्य प्रदेश सरकार के सूचना एवं प्रशासन विभाग में भी सेवारत रहे परन्तु लेखन के लिए पर्याप्त समय न मिलने के कारण सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर, स्वतन्त्र लेखन करने लगे।

‘परिक्रमा’, ‘तिलस्म’, ‘रहा किनारे बैठ’, ‘यथासम्भव’ आदि उनके प्रमुख व्यंग्य–संग्रह हैं। उन्होंने नई दुनिया, नवभारत टाइम्स, साप्ताहिक हिन्दुस्तान आदि पत्र–पत्रिकाओं में भी लेखन कार्य किया। उन्होंने दूरदर्शन धारावाहिकों यथा ‘विक्रम बेताल’, ‘सिंहासन बत्तीसी’, ‘ये जो है जिन्दगी’ आदि के लिए संवाद लिखे। इसके साथ ही ‘क्षितिज’, ‘छोटी सी बात’, ‘दिल है कि मानता नहीं’, आदि फिल्मों के लिए संवाद लेखन का कार्य भी किया। ‘पद्मश्री’ पुरस्कार से सम्मानित शरद जी ने 05 सितम्बर, 1991 (मुम्बई) में इस संसार से विदा ले ली। शरद जोशी जीवनपर्यन्त हिन्दी साहित्य की सेवा करते रहे। उन्होंने कहानी, निबन्ध, रिपोर्ताज, संस्मरण आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं को अपनाकर व्यंग्य को नया आयाम प्रदान किया। उनके व्यंग्य लेखन के कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नवत् हैं–

कहानी–

“कहानी जीवन, समाज, युगबोध और भाव बोध के परस्पर सम्बन्धों एवं फलस्वरूप उत्पन्न प्रतिक्रिया का पूर्ण कलात्मक ईमानदारी से प्रस्तुत किया गया चित्रण है।”¹ शरद जी ने अपनी व्यंग्य कहानियों के माध्यम से समाज व जीवन की विद्रूपताओं व विसंगतियों को जनता के समक्ष प्रस्तुत कर, जनता को जाग्रत करने का प्रयास किया। उनकी कहानियाँ, उद्देश्यपूर्ण कथानक, चुटीले संवादों, सरल व प्रभावशाली भाषा के कारण पाठकों के हृदय में शीघ्र स्थान प्राप्त कर लेती हैं। यथा–‘तिलस्म’ नामक फंतासी कहानी में मात्र दो पात्रों के माध्यम से, उन्होंने बेरोजगारी की समस्या को चित्रित किया है। इस कहानी पर देवकीनन्दन खत्री की रचना ‘चन्द्रकान्ता’ का प्रभाव दिखाई देता है। उदाहरण– “अजब जिन्दगी है– हवा, सूरज, पानी और मेवे की दरख्त, अगर नहीं कुछ है तो एक दरवाजा नहीं। कोई पेच है, कोई कल जिसकी ताली उसके पास नहीं है। वह ताली किसी उल्लू के पेट में बन्द है और भूतनाथ हर बार निराश होता है।”²

‘मुद्रिका रहस्य’ नामक कहानी में दुष्यन्त–शकुन्तला के प्रसंग को नवीन व्यंग्यात्मक मोड़ देकर, राजनीतिक व सामाजिक अव्यवस्थाओं पर तीक्ष्ण व्यंग्य किया है। महर्षि ‘कण्व’ के कथन द्वारा स्त्री–उत्पीड़न की समस्या को इस प्रकार उठाया गया है– “आप ही सोचिए, मैं क्या कर सकता हूँ! क्या आठों पहर निगरानी रखूँ? नगर के छोकरे आकर आश्रम के चक्कर काटते हैं, सीटी बजाते हैं, गुण्डे कहीं के! आज के ज़माने में शान्ति से आश्रम चलाना मुश्किल हो गया है।”³ उनकी अन्य प्रमुख कहानियाँ ‘बुद्ध के दाँत’, ‘अतृप्त आत्माओं की रेलयात्रा’, ‘यमदूत और नर्स’ आदि हैं। शरद जी की कहानियाँ उत्कृष्ट कथानक, सीमित पात्र संख्या, गूढ़ उद्देश्य व रोचकता आदि विशेषताओं से युक्त हैं।

लघुकथा—

“लघुकथा शब्द का निर्माण ‘लघु’ और ‘कथा’ इन दो शब्दों से मिलकर हुआ अर्थात् लघुकथा एक ऐसी विधा है, जो आकार में ‘लघु’ है और उसमें ‘कथा’ तत्व विद्यमान है।”⁴ ये किसी एक पात्र, एक समय या घटना पर आधारित होती है। शरद जी ने लघुकथा—लेखन में गागर में सागर भरने जैसा अद्भुत कार्य किया है। संक्षिप्त व उत्कृष्ट शब्द—संयोजन, कसा हुआ कथानक, शिल्प की तीक्ष्णता, छिपा हुआ सशक्त सन्देश उनके लघुकथा—लेखन की विशेषताएँ हैं। उनकी लघुकथाओं के कुछ प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं— ‘एक अस्वीकृति’ नामक लघुकथा में महाभारत के प्रसंग को लेकर परिस्थितियों के अनुरूप मनुष्य के बदलते दृष्टिकोण पर करारा व्यंग्य किया है। महाभारत में अर्जुन इसलिए युद्ध नहीं करना चाहते थे क्योंकि युद्ध भूमि में सामने सगे—सम्बन्धी खड़े थे परन्तु आधुनिक युग का अर्जुन अनुचित कार्य के विरुद्ध अपना स्वर इसलिए मुखरित नहीं कर पाता क्योंकि उसके सामने उसके बॉस खड़े हैं। ‘परम्परा की रक्षा’ नामक लघुकथा में नेताओं की दलबदलू व अवसरवादी प्रवृत्ति पर कुछ इस प्रकार कटाक्ष किया है— “पार्टी दफ्तर में हनुमान, अंगद, सुग्रीव, जामवन्त आदि सारे विधायकों के लिए राम अपनी पार्टी की सूची बना रहे थे सभी तरह से हिसाब लगाकर देखा, पार्टी बहुमत में नहीं आती थी। राम ने लम्बी साँस ली और कहा, विभीषण होता तो ऐसे वक्त पर ‘डिफेक्ट’ करके आ जाता।”⁵ उनकी अन्य लघु—कथाएँ हैं— ‘कर्तव्यबोध’, ‘बदलते मूल्य’, ‘टूटते परिवार’ आदि, जिनमें पौराणिक कथाओं के प्रसंगों को आधार बनाकर राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि समस्याओं व विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया गया है।

निबन्ध—

“गद्य रचना का वह लालित्यपूर्ण विधान, जिसमें वैयक्तिक आत्माभिव्यंजना के साथ भावों व विचारों का स्वच्छन्द किन्तु पूर्ण, संक्षिप्त, सुगठित, रचनात्मक सौष्ठव युक्त प्रकाशन हो, निबन्ध कहलाता है।”⁶ इसे जीवन्त विधा भी कहा जाता है क्योंकि समाज का प्रतिबिम्ब निबन्धों में झलकता है। शरद जी ने अपने निबन्धों में समाज व जीवन के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित विसंगतियों को निडरतापूर्वक उजागर किया है। ‘एक अन्तर्हीन प्रदर्शनी’ नामक लेख में सरकारी कार्यालयों में व्याप्त निष्क्रियता, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी आदि समस्याओं को अपनी व्यंग्य की चाशनी में लपेटकर कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया है— “बड़ा मैदान हो, ढेर सारे मण्डप हों। एक मण्डप उद्योग विभाग का, जिसमें बताया जाए कि मिलावट करने, नकल कर हूबहू बना बेचने में देश ने इधर कितनी प्रगति की है.... कालाबाजारी पर एक मण्डप, भ्रष्टाचार पर एक मण्डप।”⁷ उनके अन्य कुछ प्रमुख निबन्ध ‘इक्कीसवीं सदी’, ‘शुद्धता की खोज’, ‘हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे’ हैं।

नाटक—

नाटक, दृश्य विधा के अन्तर्गत आता है तथा हिन्दी साहित्य की अन्य सभी विधाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। शरद जी ने ‘अन्धों का हाथी’ और ‘एक था गधा उर्फ अलादाद खों’ नामक दो ही व्यंग्य नाटक लिखे हैं परन्तु ये दोनों ही बहुचर्चित व प्रासंगिक नाटक उनके व्यंग्य— लेखन के उत्कृष्ट उदाहरण माने जाते हैं। ‘एक था गधा उर्फ अलादाद खों’ नामक नाटक में ऐसे नेताओं व प्रशासनिक वर्ग के अधिकारियों पर आक्रोश व्यक्त किया गया है, जो अपने लाभ व प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए, किसी भी निकृष्ट कार्य को करने से पीछे नहीं हटते। नवाब का कथन देखिए— “हजारों की यह भीड़ एक आईना है, यह भीड़ जिसमें अपना अक्स बनाए रखना और कोशिश, उसे बनाए रखने की राजनीति है, जिसके लिए जरूरी हो अगर तो एक लाख नहीं, लाखों के अम्बार भी खड़े करने पड़े तो गलत नहीं।”⁸ शरद जी का दूसरा प्रसिद्ध नाटक ‘अंधों का हाथी’ है। यह नाटक प्रतीकात्मक शैली में लिखा गया है। उन्होंने प्रस्तुत नाटक में भ्रष्ट नेताओं के प्रतीक— ‘चार अंधो व एक अंधी’ के माध्यम से नेताओं की बेईमानी, स्वार्थपरता, भ्रष्ट—चरित्र को उजागर किया है। इसी प्रकार समस्याओं के प्रतीक— ‘हाथी’ के माध्यम से देश में व्याप्त समस्याओं तथा जनता के प्रतीक— ‘सूत्रधार’ के द्वारा जनता पर होने वाले अत्याचार व शोषण का यथार्थ चित्रण किया है।

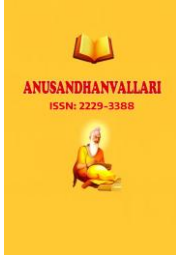
उपन्यास—

उपन्यास आधुनिक काल की देन माना जाता है। डॉ० भगीरथमिश्र के अनुसार “युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण झँकी प्रस्तुत करने वाला गद्य काव्य उपन्यास कहलाता है।”⁹

शरद जी ने एकमात्र ‘मैं, मैं और केवल मैं.....’ नामक लघु—उपन्यास लिखा है। यह उपन्यास अपनी शिल्पकारी, नवीन शैली व अद्भुत कथा—कथन के कारण एक विलक्षण व अद्वितीय रचना है। प्रस्तुत उपन्यास में ‘कमलमुख’ नामक पात्र के माध्यम से शरद जी ने लेखकों, प्रकाशकों आलोचकों आदि पर तिलिस्मी व्यंग्य बाण चलाए हैं। यथा— “साहित्य प्रारम्भ में साधना है। बाद में प्रकाशक की आराधना है।”¹⁰ प्रस्तुत पंक्ति लेखकों के व्यावसायिक दृष्टिकोण पर कटाक्ष करती है। प्रारंभ में लेखक साहित्य को गहन तपस्या के रूप में देखता है परन्तु बाद में वह अपनी कलात्मक पवित्रता को नष्ट कर, प्रकाशकों को प्रसन्न करने और लोकप्रियता पाने के लिए सतही रचना—कर्म करने लग जाता है।

रिपोर्ट—

रिपोर्ट में घटनाओं का सीधे—सीधे विवरण प्रस्तुत कर दिया जाता है, जबकि रिपोर्टाज में घटनाओं को कलात्मक व चित्रात्मक रूप में प्रस्तुत करने से वह, शुष्कता के स्थान पर साहित्यिक रूप प्राप्त कर लेती है। शरद जी ने सजीव, यथार्थ व प्रभावपूर्ण व्यंग्यात्मक भाषा—शैली में रिपोर्टाज लेखन किया है। ‘कितने खास अपने, इतने पास अपने’ नामक लेख में अपने नगर में कविता—पाठ के आयोजन की रपट को प्रस्तुत कर, वे व्यंग्यात्मक रूप से कहते हैं कि आयोजन में आने वाले श्रोतागण सब अपने ही जानकार थे— “श्रोताओं में अधिकांश हमारे विभाग के कमाने वाले..... आदि थे।”¹¹ ‘आलोच्य वर्ष की उल्लेखनीय रपट’ लेख में प्रशासनिक व राजनीतिक अव्यवस्थाओं की पोल खोली है। ‘डूबता कमरा’ नामक लेख में समस्याओं पर मूक बनी रहने वाली जनता पर कटाक्ष किया है।



पत्र-साहित्य-

यह “सार्वजनिक उपयोगिता के कारण प्रकाशित होने वाला ऐसा साहित्यिक रूप है, जिसमें लेखक के वास्तविक व्यक्तित्व के साथ भावग्राहक के व्यक्तित्व और समकालीन घटनाओं की स्पष्ट झलक मिलती है।”¹² शरद जी द्वारा लिखे गये पत्र हिन्दी साहित्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं। उन्होंने इन पत्रों में व्यंग्य-विधा को अपना हथियार बनाकर तत्कालीन समस्याओं व विसंगतियों पर कशाघात किया है। ‘भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र’ लेख के माध्यम से स्वार्थी प्रेम, प्रेम के वस्तुकरण व गरीबी आदि समस्याओं पर व्यंग्य किया है। यथा- “प्रेम की पीड़ा गहरी होती है, पर गरीबी की पीड़ा उससे भी गहरी होती है।”¹³ प्रेम की पीड़ा भावनात्मक होती है, जो व्यक्ति के हृदय और मन दोनों को आहत करती है परन्तु गरीबी की पीड़ा मनुष्य के अस्तित्व पर घातक प्रहार कर, जीवन जीने के आधार को भी नष्ट कर देती है। अतः स्पष्ट है कि गरीबी की पीड़ा, प्रेम की पीड़ा से अत्यन्त गहरी है। अपने एक अन्य लेख ‘सेवकराम निर्भय के तीन पत्र’ में नेताओं की अवसरवादी, दलबदलू प्रवृत्ति, चुनाव की राजनीति पर व्यंग्य किया है।

यात्रा-साहित्य-

“जब कोई लेखक अपनी यात्रा की अनुभूतियों को कलात्मक रूप देकर संवेदना के साथ प्रस्तुत करता है तो उसे यात्रा-साहित्य कहा जाता है।”¹⁴ शरद जी के यात्रा-साहित्य, मात्र यात्रा का वर्णन ही नहीं करते वरन् सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विद्यमान विसंगतियों पर भी कशाघात करते हैं। ‘अजन्ता के आस-पास’ नामक लेख के माध्यम से पर्यटकों से भीख माँगते भारतीय गरीब बच्चों व सरकारी कार्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर कटाक्ष किया है। वह कहते हैं कि यदि एलोरा की गुफा आज के समय में बनती तो सरकारी बाबू रात-दिन उसे बजट और फाइलों में उलझा कर रख देते। उदाहरण- “एलोरा की सोलह नम्बर की गुफा अगर इस जमानों में बनती तो उसका बजट और फाइलों का वर्क इतना हो जाता कि अट्नी से ऊपरी गुफाओं में अफसर बाबू समा जाते।”¹⁵ इसी प्रकार ‘बिहार पहुँचकर नरभसा गये शरद जोशी’ नामक लेख में स्थानीय लोगों द्वारा आंग्ल भाषा के अत्यधिक उपयोग करने पर कटाक्ष किया है। बिहार जैसे हिन्दी भाषी क्षेत्र में आंग्ल भाषा, स्थानीय बोली का अभिन्न अंग बन गयी है, जिससे हिन्दी की शुद्धता प्रभावित हो रही है।

रेखाचित्र-

रेखाचित्र विधा के अन्तर्गत लेखक, किसी घटना, वस्तु या व्यक्ति का अपने शब्दों में संजीव व चित्रात्मक वर्णन करता है। शरद जी द्वारा लिखे गए रेखाचित्र सोद्देश्यपूर्ण व चित्रात्मक हैं। ‘इन्दौर के स्वर’ नामक लेख में शरद जी ने इन्दौर शहर के दैनिक जीवन का संजीव चित्र खींचा है। ‘महेन्द्र भाई’ नामक लेख में अपने मित्र के व्यक्तित्व व जीवन को अपने शब्दों से उभारा है। उदाहरण- “वह निर्मल-सी रह-रहकर फूट जानेवाली हँसी, उदार व्यावहारिकता और हर विकसित होती प्रवृत्ति के प्रति उनका शुभचिन्तक भाव जो कितनी शामों, कितनी बैठकों, कितनी मुलाकातों में मैंने देखा है, मुझे बार-बार याद आ रही है।”¹⁶

संस्मरण-

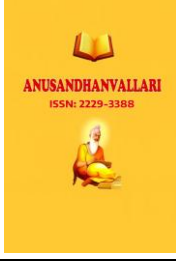
“भावुक कलाकार जब अतीत की अनन्त स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अतिरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं से विशिष्ट कर रोचक ढंग से यथार्थ रूप में व्यक्त कर देता है, उसे संस्मरण कहते हैं।”¹⁷ शरद जी के संस्मरण जीवन्त, कलात्मक, यथार्थ व प्रत्यक्षता की गहन छाप से ओतप्रोत हैं। ‘इन्दौर में शायदियों देखकर’ लेख में उन्होंने विवाह में की जाने वाली फिजूलखर्ची पर कटाक्ष किया है। ‘फुटपाथ के कलाकार’ लेख में जेबकतरों पर व्यंग्य किया है। ‘मैं प्रतीक्षा में हूँ’ लेख के माध्यम से मध्यवर्गीय परिवार की समस्याओं का चित्रण कुछ इस प्रकार किया है- “यह मध्यमवर्ग किस प्रकार अन्दर से खोखला रहकर ऊपर से पॉलिश करता है, बच्चों का दूध छीनकर अफसरों को चाय का निमन्त्रण देता है... मैंने देखा है।”¹⁸

निष्कर्ष-

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, शरद जोशी एक सफल व्यंग्यकार, पत्रकार, संवाद लेखक, सम्पादक, व एक सजग लेखक थे। वह हिन्दी के पहले व्यंग्य-लेखक हैं, जिन्होंने कवि-सम्मेलनों में गद्य-पाठ करने का सफल प्रयोग किया और व्यंग्य को जन-जन में लोकप्रिय बनाया। उनके व्यंग्य में विषयवस्तु की विविधता दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने फिल्म, क्रिकेट, साहित्य, भ्रष्टाचार, अर्थव्यवस्था, सामाजिक-राजनीतिक समस्याओं, अन्तर्राष्ट्रीय विषय आदि सभी क्षेत्रों पर अपनी कलम चलाई है। उन्होंने गद्य की जिस भी विधा को अपनाया उसे दीप्तिमान किया। उन्होंने व्यंग्यात्मक निबन्ध, संस्मरण, पत्र, रिपोर्टाज, कहानी, रेखाचित्र, नाटक, आदि विभिन्न विधाओं में व्यंग्य के सफल प्रयोग किये हैं, जो उनकी भाषा, शिल्प और कल्पना-शक्ति की विविधता को प्रदर्शित करते हैं। विषयों की विभिन्नता व व्यापकता, परिस्थितियों का अवलोकन व गहन विश्लेषण करने की प्रवृत्ति व नवीन दृष्टिकोण ने उनके लेखन को अधिक सार्थक, शाश्वत व प्रासंगिक बनाया, जिसने शरद जोशी को हिन्दी व्यंग्य साहित्य में अन्य लेखकों से विशिष्ट व महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ वंशीधर प्रकाश, हिन्दी कहानी, नामकरण, इतिहास एवं सिद्धान्त, साहित्यायन, कानपुर, 2023 प्रथम संस्०, पृ० सं०-24
2. शरद जोशी, तिलस्म, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, पृ०सं०-14
3. पूर्ववत, (मुद्रिका रहस्य) पृ०सं०-46
4. योगराज प्रभाकर, लघुकथा विधा, वेबसाइट, www.openbooksonline.com अप्रैल 03, 2015
5. शरद जोशी, घाव करें गम्भीर (परम्परा की रक्षा) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023 संस्०, पृ०सं०-69



6. डॉ० राधा भारद्वाज, हिन्दी निबन्ध: सैद्धान्तिक निरूपण एवं विकास, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2022 प्रथम संस्० पृ०सं०-35
7. शरद जोशी, यथासम्भव, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1985 प्रथम संस्० पृ०सं०-52
8. शरद जोशी, दो व्यंग्य नाटक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023 बारहवाँ संस्०, पृ०सं०-79
9. उपन्यास का अर्थ एवं परिभाषा, वेबसाइट, www.infosurf.com
10. शरद जोशी, मैं, मैं और केवल मैं, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018 चतुर्थ संस्० पृ०सं०-19
11. शरद जोशी, यथासमय, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2005 प्रथम संस्० पृ०सं०-71
12. डॉ० कमल पुंजाणी, हिन्दी का पत्र-साहित्य, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर 1983 प्रथम संस्० पृ०सं०-18
13. शरद जोशी, व्यंग्यसमय, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2024 तृतीय संस्० पृ०सं०-86
14. यात्रा वृत्तान्त: परिभाषा, तत्व, विशेषताएँ, वेबसाइट www.tutorialhindi.com, नवम्बर 28, 2023
15. शरद जोशी, और.... शरद जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018 प्रथम संस्० पृ०सं०-210
16. पूर्ववत्- (महेन्द्र भाई) पृ०सं०-67
17. डॉ० बद्रीनायाण तिवारी, साहित्य संगम, इलाहाबाद, 2012 प्रथम संस्० पृ०सं०-13
18. शरद जोशी, यत्र तत्र सर्वत्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022 दसवाँ संस्० पृ०सं०-349